Pro

Chapter 27

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1	אַל־	תִּתְהַלֵּל	בְּיוֹם	מָחָר	כִּי	לֹא־	תֵּדַע	מַה־	יֵּלֶד	יוֹם׃
	मत–	घमण्ड–कर	दिन–में–	कल	क्योंकि	नहीं–	जानता	क्या–	जन्म–देगा	दिन।
	H0408		H3117	H4279		H3808	H3045	H4100	H3205	H3117

कल के विषय में कोई बड़ा बोल मत बोलो। कौन जानता है कल क्या कुछ घटने को है।

2	יְהַלֶּלְךָ	זָר	וְלֹא־	פִּיךָ	נָכְרִי	וְאַל־	שְׂפָתֶיךָ׃
	स्तुति–करे–तुझे	अजनबी	और–नहीं–	तेरा–मुँह	परदेशी	और–मत–	तेरे–होंठ।
			H3808	H6310	H5237	H0408	H8193

अपने ही मुँह से अपनी बड़ाई मत करो दूसरों को तुम्हारी प्रशंसा करने दो।

3	כְּבֶד־	אֶבֶן	וְנֵטֶל	הַחוֹל	וְכַעַס	אֱוִיל	כָּבֵד	מִשְּׁנֵיהֶם׃
	भार–	पत्थर–का	और–बोझ	रेत–का	और–चिढ़	मूर्ख–की	भारी	दोनों–से।
	H3514	H0068	H5192	H2344		H0191	H3515	H8147

कठिन है पत्थर ढोना, और ढोना रेत का, किन्तु इन दोनों से कहीं अधिक कठिन है मूर्ख के द्वारा उपजाया गया कष्ट।

4	אַכְזְרִיּוּת	חֵמָה	וְשֶׁטֶף	אַף	וּמִי	יַעֲמֹד	לִפְנֵי	קִנְאָה׃
	क्रूरता	क्रोध–की	और–बाढ़	रोष–की	और–कौन	खड़ा–रहेगा	सामने–	ईर्ष्या–के?
	H0395	H2534	H7858	H0639	H4310	H5975	H6440	H7068

क्रोध निर्दय और दर्दम्य होता है। वह नाश कर देता है। किन्तु ईर्ष्या बहुत ही बुरी है।

5	טוֹבָה	תּוֹכַחַת	מְגֻלָּה	מֵאַהֲבָה	מְסֻתָּרֶת׃
	अच्छी	डाँट	खुली	प्रेम–से	छिपी।
			H1540	H0160	H5641

छिपे हुए प्रेम से, खुली घुड़की उत्तम है।

6	נֶאֱמָנִים	פִּצְעֵי	אוֹהֵב	וְנַעְתָּרוֹת	נְשִׁיקוֹת	שׂוֹנֵא׃
	विश्वसनीय	घाव	प्रेमी–के	और–बहुतायत	चुम्बन	बैरी–के।
	H0539	H6482	H0157	H6280	H5390	H8130

हो सकता है मित्र कभी दुःखी करें, किन्तु ये उसका लक्ष्य नहीं है। इससे शत्रु भिन्न है। वह चाहे तुम पर दया करे किन्तु वह तुम्हें हानि पहुँचाना चाहता है।

7	נֶפֶשׁ	שְׂבֵעָה	תָּבוּס	נֹפֶת	וְנֶפֶשׁ	רְעֵבָה	כָּל־	מַר	מָתוֹק׃
	प्राण	तृप्त	रौंदता	शहद	और–प्राण	भूखा	सब–	कड़वा	मीठा।
	H5315	H7649	H0947	H5317	H5315	H7457	H3605	H4751	H4966

पेट भरजाने पर शहद भी नहीं भाता किन्तु भूख में तो हर चीज भाती है।

8	כְּצִפּוֹר	נוֹדֶדֶת	מִן־	קִנָּהּ	כֵּן־	אִישׁ	נוֹדֵד	מִמְּקוֹמוֹ׃
	जैसे–चिड़िया	भटकती	से–	अपने–घोंसले	वैसा–	मनुष्य	भटकता	अपने–स्थान–से।
	H6833	H5074		H7064		H0376	H5074	H4725

अपना घर छोड़कर भटकता मनुष्य ऐसा, जैसे कोई चिड़िया भटकी निज घोंसले से।

9	שֶׁמֶן	וְקְטֹרֶת	יְשַׂמַּח־	לֵב	וּמֶתֶק	רֵעֵהוּ	מֵעֲצַת־	נֶפֶשׁ׃
	तेल	और–धूप	आनन्दित–करते–	हृदय	और–मिठास	मित्र–की	सलाह–से–	प्राण।
	H8081	H7004	H8055			H7453	H6098	H5315

इत्र और सुगंधित धूप मन को आनन्द से भरते हैं और मित्र की सच्ची सम्मति सेमन उल्लास से भर जाता है।

10

רֵֽעֲךָ֨	[ורעה]	(וְרֵ֪עַ)	אָבִ֡יךָ	אַל־	תַּעֲזֹ֗ב	וּבֵ֥ית	אָחִ֗יךָ	אַל־	תָּ֭בוֹא	בְּי֣וֹם	אֵידֶ֑ךָ	ט֥וֹב	שָׁכֵ֥ן	קָ֝ר֗וֹב	מֵאָ֥ח	רָחֽוֹק׃
मित्र-तेरा	[और-मित्र]	(और-मित्र)	पिता-का	मत-	छोड़	और-घर	भाई-के	मत-	जा	दिन-में-	तेरी-विपत्ति-के	अच्छा	पड़ोसी	निकट	भाई-से	दूर।
H7453	H7463	H7453	H0001	H0408			H0251	H0408	H0935	H3117	H0343		H7934	H7138	H0251	H7350

अपने मित्र को मत भूलो न ही अपने पिता के मित्र को। और विपत्ती में सहायता के लिये दूर अपने भाई के घर मत जाओ। दूर के भाई से पास का पड़ोसी अच्छा है।

11

חֲכַ֣ם	בְּ֭נִי	וְשַׂמַּ֣ח	לִבִּ֑י	וְאָשִׁ֖יבָה	חֹרְפִ֣י	דָבָֽר׃
बुद्धिमान-बन	बेटा-मेरे	और-आनन्दित-कर	हृदय-मेरा	और-मैं-उत्तर-दूँगा	निन्दा-करने-वाले-को	वचन।
H2449		H8055		H7725		H1697

हे मेरे पुत्र, तू बुद्धिमान बन जा और मेरा मन आनन्द से भर दे। ताकि मेरे साथ जो घृणा से व्यवहार करे, मैं उसको उत्तर दे सकूँ।

12

עָר֤וּם	רָאָ֣ה	רָעָ֣ה	נִסְתָּ֑ר	פְּ֝תָאיִ֗ם	עָבְר֥וּ	נֶעֱנָֽשׁוּ׃
चतुर	देखता	बुराई	छिप-जाता	भोले	गुज़रते	दण्डित-होते।
H6175	H7200		H5641			H6064

विपत्ति को आते देखकर बुद्धिमान जन दूर हट जाते हैं, किन्तु मूर्खजन बिना राह बदले चलते रहते हैं और फंस जाते हैं।

13

קַח־	בִּ֭גְדוֹ	כִּי־	עָ֣רַב	זָ֑ר	וּבְעַ֖ד	נָכְרִיָּ֣ה	חַבְלֵֽהוּ׃
ले-	वस्त्र-उसका	जब-	जामिन-होता	अजनबी-का	और-के-लिए-	परायी-स्त्री	बन्धक-रख-उसे।
H3947			H6148		H1157	H5237	

जो किसी पराये पुरूष का जमानत भरता है उसे अपने वस्त्र भी खोना पड़ेगा।

14

מְבָ֘רֵ֤ךְ	רֵעֵ֨הוּ	בְּק֣וֹל	גָּ֭דוֹל	בַּבֹּ֣קֶר	הַשְׁכֵּ֑ים	קְ֝לָלָ֗ה	תֵּחָ֥שֶׁב	לֽוֹ׃
आशीर्वाद-देने-वाला	मित्र-अपने	आवाज़-से	बड़ी	सुबह-में	जल्दी-उठकर	शाप	गिनी-जाएगी	उसे।
H1288	H7453			H1242	H7925	H7045	H2803	

ऊँचे स्वर में “सुप्रभात” कह कर के अलख सवेरे अपने पड़ोसी को जगाया मत कर। वह एक शाप के रूप में झेलेगा आर्शीवाद में नहीं।

15

דֶּ֣לֶף	ט֭וֹרֵד	בְּי֣וֹם	סַגְרִ֑יר	וְאֵ֥שֶׁת	[מדונים]	(מִ֝דְיָנִ֗ים)	נִשְׁתָּוָֽה׃
टपकाव	लगातार	दिन-में-	वर्षा-के	और-स्त्री	[झगड़ालू]	(झगड़ालू)	समान।
H1812	H2956	H3117	H5464	H0802	H4066	H4066	

झगड़ालू पत्नी होती है ऐसी जैसी दुर्दिन की निरन्तर वर्षा।

16

צֹפְנֶ֥יהָ	צָֽפַן־	ר֑וּחַ	וְשֶׁ֖מֶן	יְמִינ֣וֹ	יִקְרָֽא׃
छिपाने-वाला-उसे	छिपाता-	वायु	और-तेल	दाहिने-हाथ-अपने	पुकारता।
H6845	H6845	H7307	H8081	H3225	H7121

रोकना उसको होता है वैसा ही जैसे कोई रोके पवन को और पकड़े मुट्ठी में तेल को।

17

בַּרְזֶ֣ל	בְּבַרְזֶ֣ל	יָ֑חַד	וְ֝אִ֗ישׁ	יַ֣חַד	פְּנֵֽי־	רֵעֵֽהוּ׃
लोहा	लोहे-से	तेज़-करता	और-मनुष्य	तेज़-करता	चेहरे-	मित्र-के।
H1270	H1270		H0376		H6440	H7453

जैसे धार धरता है लोहे से लोहा, वैसी ही जन एक दूसरे की सीख से सुधरते हैं।

18

נֹצֵ֣ר	תְּ֭אֵנָה	יֹאכַ֣ל	פִּרְיָ֑הּ	וְשֹׁמֵ֖ר	אֲדֹנָ֣יו	יְכֻבָּֽד׃
रखवाली-करने-वाला	अंजीर-के-पेड़-की	खाएगा	फल-उसका	और-रखवाली-करने-वाला	स्वामी-अपने	आदर-पाएगा।
H5341	H8384	H0398	H6529	H8104	H0113	H3513

जो कोई अंजीर का पेड़ सिंचता है, वह उसका फल खाता है। वैसे ही जो निज स्वामी की सेवा करता, वह आदर पा लेता है।

19

כַּ֭מַּיִם	הַפָּנִ֣ים	לַפָּנִ֑ים	כֵּ֤ן	לֵֽב־	הָ֝אָדָ֗ם	לָאָדָֽם׃
जैसे-जल	चेहरे	चेहरे-को	वैसे	हृदय-	मनुष्य-का	मनुष्य-को।
H4325	H6440	H6440			H0120	H0120

जैसे जल मुखड़े को प्रतिबिम्बित करता है, वैसे ही हृदय मनुष्य को प्रतिबिम्बित करता है।

20

שְׁאֹ֣ול	]ואבדה[	)וַאֲבַדֹּו(	לֹ֣א	תִשְׂבַּ֑עְנָה	וְעֵינֵ֥י	הָ֝אָדָ֗ם	לֹ֣א	תִשְׂבַּֽעְנָה׃
शेओल	[और-विनाश]	(और-अबद्दोन)	नहीं	तृप्त-होतीं	और-आँखें	मनुष्य-की	नहीं	तृप्त-होतीं।
H7585	H0011	H0011	H3808	H7646		H0120	H3808	H7646

मृत्यु और महानाश कभी तृप्त नहीं होते और मनुष्य की आँखें भी तृप्त नहीं होती।

21

מַצְרֵ֣ף	לַ֭כֶּסֶף	וְכ֣וּר	לַזָּהָ֑ב	וְ֝אִ֗ישׁ	לְפִ֣י	מַהֲלָלֹֽו׃
कुठाली	चाँदी-के-लिए	और-भट्टी	सोने-के-लिए	और-मनुष्य	अनुसार-	उसकी-प्रशंसा।
H4715	H3701	H3564	H2091	H0376	H6310	H4110

चाँदी और सोने को भट्टी—कुठाली में परख लिया जाता है। वैसे ही मनुष्य उस प्रशंसा से परखा जाता है जो वह पाता है।

22

אִ֥ם	תִּכְתֹּֽושׁ־	אֶת־	הָאֱוִ֨יל׀	בַּמַּכְתֵּ֡שׁ	בְּתֹ֣וךְ	הָ֭רִיפֹות	בַּֽעֱלִ֑י	לֹֽא־	תָס֥וּר	מֵ֝עָלָ֗יו	אִוַּלְתֹּֽו׃	פ
यदि	कूटे-	को-	मूर्ख	ओखली-में	बीच-में-	दानों	मूसल-से	नहीं-	हटेगी	उस-से	मूर्खता-उसकी।	—
	H3806	H0853	H0191	H4388	H8432	H7383	H5940	H3808	H5493		H0200	

तू किसी मूर्ख को चूने में पीस—चाहे जितना महीन करे और उसे पीस कर अनाज सा बना देवे उसका चूर्ण किन्तु उसकी मूर्खता को, कभी भी उससे तू दूर न कर पायेगा।

23

יָדֹ֣עַ	תֵּ֭דַע	פְּנֵ֣י	צֹאנֶ֑ךָ	שִׁ֥ית	לִ֝בְּךָ֗	לַעֲדָרִֽים׃
जानते-हुए	जान	चेहरा	भेड़ों-तेरी	लगा	मन-अपना	झुण्डों-पर।
H3045	H3045	H6440	H6629	H7896		H5739

अपने रेवड़ की हालत तू निश्चित जानता है। अपने रेवड़ की ध्यान से देखभाल कर।

24

כִּ֤י	לֹ֣א	לְעֹולָ֣ם	חֹ֑סֶן	וְאִם־	נֵ֝֗זֶר	לְדֹ֣ור	]דור[	)וָדֹֽור׃(
क्योंकि	नहीं	सदा-के-लिए	धन	और-यदि-	मुकुट	पीढ़ी-से-	[पीढ़ी]	(पीढ़ी?)
	H3808	H5769	H2633		H5145	H1755	H1755	H1755

क्योंकि धन दौलत तो टिकाऊ नहीं होते हैं। यह राजमुकुट पीढ़ी—पीढ़ी तक बना नहीं रहता है।

25

גָּלָ֣ה	חָ֭צִיר	וְנִרְאָה־	דֶ֑שֶׁא	וְ֝נֶאֶסְפ֗וּ	עִשְּׂבֹ֥ות	הָרִֽים׃
गायब-होती	घास	और-दिखती-	हरियाली	और-इकट्ठी-होतीं	जड़ी-बूटियाँ	पहाड़ों-की।
H1540		H7200	H1877	H0622	H6212	H2022

जब चारा कट जाता है, तो नई घास उग आती है। वह घास पहाड़ियों पर से फिर इकट्ठी कर ली जाती है।

26

כְּבָשִׂ֥ים	לִלְבוּשֶׁ֑ךָ	וּמְחִ֥יר	שָׂ֝דֶ֗ה	עַתּוּדִֽים׃
भेड़े	वस्त्र-तेरे-लिए	और-दाम	खेत-का	बकरे।
H3532	H3830	H4242		H6260

तब तब ये मेमनें ही तुझे वस्त्र देंगे और ये बकरियाँ खेतों की खरीद का मूल्य बनेगीं।

27

וְדֵ֤י׀	חֲלֵ֬ב	עִזִּ֗ים	לְֽ֭לַחְמְךָ	לְלֶ֣חֶם	בֵּיתֶ֑ךָ	וְ֝חַיִּ֗ים	לְנַעֲרֹותֶֽיךָ׃
और-पर्याप्त	दूध	बकरियों-का	रोटी-तेरी-के-लिए	रोटी	घर-तेरे-के-लिए	और-जीवन	दासियों-तेरी-के-लिए।
H1767	H2461	H5795	H3899	H3899			H5291

तेरे परिवार को, तेरे दास दासियों को और तेरे अपने लिये भरपूर बकरी का दूध होगा।